JSL, 11(5), May 2026: 45- 55

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ



भारतीय दर्शन के विकास में शंकराचार्य के योगदान एवं उनके स्थायी दार्शनिक प्रभाव का अध्ययन

Chumki Pal

Research Scholar, Sanskrit, Vikrant University, Gwalior

Dr. Sapna Narayan

Supervisor, Vikrant University, Gwalior

सारांश

भारतीय दर्शन के विकास में शंकराचार्य का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अद्वैत वेदान्त का व्यवस्थित प्रतिपादन करते हुए उपनिषदों की दार्शनिक परंपरा की गहन व्याख्या प्रस्तुत की। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय दार्शनिक चिंतन के क्षेत्र में शंकराचार्य के योगदान का विश्लेषण किया गया है, जिसमें विशेष रूप से ब्रह्म, आत्मा, माया, अविद्या और अध्यास संबंधी उनकी अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि उनकी तात्त्विक संरचना ने परम वास्तविकता और व्यावहारिक अनुभव के मध्य संबंध की व्याख्या किस प्रकार की, जबकि उनकी ज्ञानमीमांसात्मक दृष्टि ने ज्ञान, तर्क, शास्त्रीय व्याख्या और आत्मसाक्षात्कार को परस्पर संबद्ध किया। अध्ययन में शंकराचार्य की मोक्ष संबंधी अवधारणा का भी विश्लेषण किया गया है, जिसमें मोक्ष को आत्मा के वास्तविक स्वरूप के ज्ञान के माध्यम से अज्ञान के निवारण के रूप में समझाया गया है। इसके अतिरिक्त, उनके दार्शनिक विचारों के उत्तरवर्ती वेदान्तीय विमर्शों पर प्रभाव तथा चेतना, आत्मस्वरूप, वास्तविकता और अद्वैत से संबंधित समकालीन चर्चाओं में उनकी निरंतर प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि शंकराचार्य का योगदान केवल अद्वैत वेदान्त को एक व्यवस्थित दार्शनिक प्रणाली के रूप में स्थापित करने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने वास्तविकता, ज्ञान और मोक्ष को समझने के लिए एक स्थायी दार्शनिक आधार प्रदान किया। उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और भगवद्गीता की उनकी व्याख्याओं ने वेदान्त दर्शन की बौद्धिक आधारभूमि को सुदृढ़ किया तथा भारतीय दार्शनिक चिंतन में उनके स्थायी स्थान को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अध्ययन ने आगे यह भी स्पष्ट किया कि उनके दार्शनिक विचार आज भी महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे शास्त्रीय भारतीय तात्त्विक अन्वेषण को चेतना और आत्मज्ञान से संबंधित समकालीन विमर्शों के साथ जोड़ने की क्षमता रखते हैं। इस प्रकार उनका चिंतन भारतीय तथा तुलनात्मक दोनों प्रकार की बौद्धिक परंपराओं में दार्शनिक व्याख्या का एक

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

महत्त्वपूर्ण विषय बना हुआ ळें

प्रमुख शब्दः शंकराचार्य, अद्वैत वेदान्त, भारतीय दर्शन, ब्रह्म, आत्मा, माया, अविद्या, ज्ञानमीमांसा, मोक्ष, अद्वैतवाद

1. भूमिका

भारतीय दर्शन विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक विविधतापूर्ण दार्शनिक परंपराओं में से एक है, जिसमें वास्तविकता, ज्ञान, आत्मा, दुःख तथा मुक्ति से संबंधित मूलभूत प्रश्नों का गहन अन्वेषण किया गया है। इस परंपरा में वेदान्त का विशिष्ट महत्त्व है, क्योंकि इसका दार्शनिक चिंतन उपनिषदों, भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्रों के गहन अध्ययन और व्याख्या से संबद्ध रहा है। वेदान्त के प्रमुख चिंतकों में शंकराचार्य का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि उन्होंने अद्वैत वेदान्त अर्थात् अद्वैतवादी वेदान्त का व्यवस्थित प्रतिपादन किया। उनका दार्शनिक चिंतन ऐसे बौद्धिक वातावरण में विकसित हुआ, जो बौद्ध, जैन, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा तथा विभिन्न वेदान्तीय परंपराओं के मध्य होने वाले दार्शनिक विमर्शों से प्रभावित था।

अद्वैत वेदान्त का केंद्रीय सिद्धांत यह है कि परम वास्तविकता अद्वैत है तथा ब्रह्म ही समस्त अस्तित्व की मूलभूत वास्तविकता है। शंकराचार्य के अनुसार व्यक्तिगत आत्मा और परम वास्तविकता के मध्य दिखाई देने वाला भेद अज्ञान के कारण उत्पन्न होता है। इसलिए आत्मा और ब्रह्म की एकता उनके दर्शन में केंद्रीय स्थान रखती है। माया, अविद्या तथा अध्यास अर्थात् आरोपण जैसी अवधारणाओं के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ब्रह्म की अद्वैत वास्तविकता किस प्रकार भिन्नताओं से युक्त व्यावहारिक जगत् के रूप में दिखाई देती है। इस प्रकार उनका दर्शन सामान्य मानवीय अनुभव की व्याख्या करने का प्रयास करता है, किंतु व्यावहारिक जगत् को ब्रह्म से स्वतंत्र परम वास्तविकता के रूप में स्वीकार नहीं करता।

शंकराचार्य की प्रमुख उपलब्धि उपनिषदों की दार्शनिक परंपरा की तर्कपूर्ण एवं व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत करना थी। ब्रह्मसूत्रों, प्रमुख उपनिषदों तथा भगवद्गीता पर उनकी भाष्य–रचनाएँ अद्वैत वेदान्त के विकास की आधारभूत कृतियों के रूप में प्रतिष्ठित हुईं। उनकी रचनाओं में आत्मज्ञान, विवेक, वैराग्य, अज्ञान तथा मोक्ष जैसे विषयों का भी गहन विवेचन मिलता है। अतः उनका योगदान केवल तत्त्वमीमांसा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ज्ञानमीमांसा, नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा मोक्ष के क्षेत्र तक विस्तृत हुआ। शंकराचार्य के अनुसार आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान अज्ञान के निवारण तथा मोक्ष की प्राप्ति का प्रमुख साधन है।

शंकराचार्य का प्रभाव उनके ऐतिहासिक काल से आगे तक विस्तृत रहा है और भारतीय दार्शनिक चिंतन में आज भी उनका महत्त्व बना हुआ है। वास्तविकता, आत्मस्वरूप, ज्ञान, चेतना तथा मोक्ष से संबंधित उनके विचारों ने उत्तरवर्ती वेदान्तीय दार्शनिक विमर्शों को प्रभावित किया तथा आज भी विद्वानों का ध्यान आकर्षित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय दर्शन के विकास में शंकराचार्य के योगदान का विश्लेषण किया गया है तथा उनके स्थायी दार्शनिक प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है। विशेष रूप से उनके अद्वैतवादी वास्तविकता संबंधी दृष्टिकोण, प्रामाणिक ग्रंथों की व्याख्या, ज्ञान तथा अज्ञान के सिद्धांत और मोक्ष संबंधी अवधारणा के आधार पर उनके दार्शनिक योगदान का अध्ययन किया गया है।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

2. साहित्य समीक्षा

दासगुप्ता (2024) ने भारतीय दर्शन के विकास का अध्ययन करते हुए अद्वैत वेदान्त को भारतीय दार्शनिक चिंतन के व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया। उनके अध्ययन में वास्तविकता, ज्ञान, आत्मा तथा मुक्ति से संबंधित प्रमुख दार्शनिक प्रश्नों की विवेचना की गई और अद्वैतवादी वेदान्त की व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत करने में शंकराचार्य की भूमिका को रेखांकित किया गया। इस अध्ययन ने भारतीय दर्शन में शंकराचार्य के योगदान तथा वेदान्तीय बौद्धिक परंपराओं के व्यापक विकास को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार प्रदान किया।

मिश्र (2015) ने अद्वैत वेदान्त तथा उसके विकास में आदि शंकराचार्य के योगदान का अध्ययन किया। अध्ययन में ब्रह्म और आत्मा के मध्य संबंध पर विशेष ध्यान दिया गया तथा माया और परम वास्तविकता जैसी अवधारणाओं की विवेचना की गई। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि शंकराचार्य की व्याख्या ने अद्वैत वेदान्त के केंद्रीय सिद्धांतों को समझने के लिए एक व्यवस्थित दार्शनिक आधार प्रदान किया तथा व्यक्तिगत आत्मा और परम वास्तविकता के मध्य संबंध के प्रति उसकी विशिष्ट दृष्टि को स्पष्ट किया।

श्रीवास्तव (2016) ने शंकराचार्य के दर्शन में आध्यात्मिक शिक्षा का अध्ययन किया तथा आत्मज्ञान, अनुशासन और आध्यात्मिक जागरूकता के महत्त्व को रेखांकित किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि उनका दर्शन केवल तात्त्विक चिंतन तक सीमित नहीं था, बल्कि अज्ञान के निवारण की व्यावहारिक समस्या को भी संबोधित करता था। इस प्रकार अध्ययन ने उनके दार्शनिक चिंतन के आध्यात्मिक तथा नैतिक आयामों को रेखांकित किया और दार्शनिक समझ तथा व्यक्तिगत रूपांतरण के मध्य संबंध को स्पष्ट किया।

सक्सेना और सक्सेना (2023) ने शंकराचार्य की शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन किया तथा आधुनिक समय में उनके महत्त्व की विवेचना की। अध्ययन में यह संकेत दिया गया कि अद्वैतवादी विचार आज भी इसलिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं क्योंकि वे आत्मा, चेतना और परम वास्तविकता जैसे मूलभूत प्रश्नों को संबोधित करते हैं। अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि शंकराचार्य का प्रभाव केवल अद्वैत वेदान्त के ऐतिहासिक विकास तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समकालीन दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विमर्शों में भी उनकी विचारधारा प्रासंगिक बनी हुई है।

वैष्णव (2025) ने अद्वैत वेदान्त की तुलना भारतीय बौद्ध दर्शन की माध्यमक परंपरा से करते हुए द्वैत तथा शून्यता से संबंधित दार्शनिक प्रश्नों का अध्ययन किया। अध्ययन ने तुलनात्मक दर्शन में अद्वैतवादी चिंतन के निरंतर महत्त्व को रेखांकित किया। इसने भारतीय दार्शनिक विमर्श में अद्वैतवादी विचारों की स्थायी प्रासंगिकता को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया तथा वास्तविकता, चेतना और अस्तित्व के स्वरूप से संबंधित तुलनात्मक दार्शनिक चर्चाओं में उनकी महत्ता को स्पष्ट किया।

3. शंकराचार्य और अद्वैत वेदान्त का विकास

भारतीय दर्शन के क्षेत्र में शंकराचार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान अद्वैत वेदान्त का व्यवस्थित विकास था।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

यद्यपि अद्वैतवाद के मूल आधार उपनिषदों तथा पूर्ववर्ती वेदान्तीय चिंतन में विद्यमान थे, तथापि शंकराचार्य ने इन विचारों की व्याख्या के लिए एक सुसंगत एवं व्यवस्थित दार्शनिक ढाँचा प्रस्तुत किया। उनका दार्शनिक चिंतन ऐसे व्यापक बौद्धिक वातावरण में विकसित हुआ, जिसमें बौद्ध, जैन, सांख्य, न्याय, मीमांसा तथा अन्य दार्शनिक परंपराओं के मध्य निरंतर विमर्श और वाद–विवाद होते रहे। अपने भाष्यों तथा दार्शनिक तर्कों के माध्यम से उन्होंने अद्वैत वेदान्त को भारतीय दर्शन की एक व्यवस्थित दार्शनिक परंपरा के रूप में स्थापित किया।

अद्वैत वेदान्त का आधार यह प्रतिपादन है कि ब्रह्म ही परम वास्तविकता है। ब्रह्म किसी व्यक्तिगत वस्तु या सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि उस मूलभूत वास्तविकता के रूप में समझा जाता है जिस पर समस्त अनुभव आश्रित है और जिसे सामान्य वैचारिक श्रेणियों तथा भेदों के माध्यम से पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। इस धारणा से आत्मा और ब्रह्म की एकता का सिद्धांत घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। शंकराचार्य के अनुसार वास्तविक आत्मा शरीर, इंद्रियों, मन अथवा व्यक्तिगत व्यक्तित्व के समान नहीं है, क्योंकि ये सभी परिवर्तनशील व्यावहारिक जगत् से संबंधित हैं। आत्मा का वास्तविक स्वरूप शुद्ध चेतना है, जो परम स्तर पर ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

शंकराचार्य ने अविद्या तथा माया की अवधारणाओं के माध्यम से बहुलता के प्रत्यक्ष स्वरूप की व्याख्या की। अविद्या से आशय वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप के संबंध में अज्ञान से है, जिसके कारण व्यक्ति स्वयं को शरीर, मन, भावनाओं तथा सामाजिक पहचान के साथ अभिन्न मानने लगता है। माया यह स्पष्ट करती है कि अद्वैत वास्तविकता वस्तुओं तथा व्यक्तियों से युक्त भिन्न–भिन्न जगत् के रूप में किस प्रकार दिखाई देती है। अतः पृथकत्व का अनुभव वास्तविकता की परम अवस्था नहीं माना जाता, बल्कि उसे सीमित समझ के परिणाम के रूप में समझा जाता है।

अध्यास की अवधारणा इस मिथ्या धारणा की आगे व्याख्या करती है। शंकराचार्य रस्सी को सर्प समझने का उदाहरण देते हैं। भ्रांत धारणा के समय सर्प वास्तविक प्रतीत होता है, किंतु उसका दिखाई देने वाला अस्तित्व मूलतः उस रस्सी पर निर्भर करता है जो वास्तव में वहाँ विद्यमान है। इसी प्रकार व्यक्ति स्वयं तथा जगत् को स्वतंत्र रूप से विद्यमान वास्तविकताओं के रूप में अनुभव करता है, जबकि उनका अस्तित्व अंततः ब्रह्म पर आश्रित रहता है। इसलिए अद्वैत व्यावहारिक अनुभव के उस स्तर के मध्य भेद स्थापित करता है, जहाँ सांसारिक भेद सार्थक होते हैं, और परम वास्तविकता के उस स्तर के मध्य, जहाँ ऐसे भेद स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखते।

अतः शंकराचार्य का योगदान केवल वास्तविकता की एकता के साधारण प्रतिपादन तक सीमित नहीं था। उन्होंने यह स्पष्ट करने के लिए एक व्यवस्थित दार्शनिक विवेचना प्रस्तुत की कि अज्ञान किस प्रकार बहुलता की अनुभूति उत्पन्न करता है तथा दार्शनिक ज्ञान इस मिथ्या धारणा का निवारण किस प्रकार कर सकता है। तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा तथा आध्यात्मिक अन्वेषण का समन्वय करके उन्होंने अद्वैतवादी विचारों को एक व्यापक एवं समग्र दार्शनिक प्रणाली का स्वरूप प्रदान किया। उनका अद्वैत वेदान्त का प्रतिपादन आगे चलकर भारतीय दर्शन के इतिहास में सबसे प्रभावशाली दार्शनिक विकासों में से एक बन गया।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

4. तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और मोक्ष के क्षेत्र में शंकराचार्य का योगदान

शंकराचार्य का दार्शनिक योगदान अद्वैत वेदान्त को केवल अद्वैत के सिद्धांत के रूप में स्थापित करने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें वास्तविकता, ज्ञान, अज्ञान तथा मोक्ष से संबंधित व्यवस्थित दार्शनिक विवेचन भी सम्मिलित था। उनके दर्शन ने तात्त्विक समझ और मनुष्य की मुक्ति की खोज के मध्य घनिष्ठ संबंध स्थापित किया। उनके अनुसार अज्ञान बंधन का मूलभूत कारण था, क्योंकि इसके कारण व्यक्ति आत्मा की पहचान शरीर, मन तथा निरंतर परिवर्तनशील व्यावहारिक परिस्थितियों के साथ करने लगता है। इस मिथ्या समझ के विपरीत शंकराचार्य ने आत्मा के वास्तविक स्वरूप के ज्ञान को मोक्ष का प्रमुख साधन माना। इस प्रकार उनकी दार्शनिक संरचना ने तात्त्विक अन्वेषण को ज्ञानमीमांसात्मक विवेचन तथा आध्यात्मिक रूपांतरण के साथ संबद्ध किया।

4.1 तत्त्वमीमांसात्मक योगदान

शंकराचार्य के दर्शन का तात्त्विक आधार यह प्रतिपादन है कि ब्रह्म परम वास्तविकता है। ब्रह्म को किसी व्यक्तिगत वस्तु अथवा सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि समस्त अस्तित्व के आधारभूत मूल तत्त्व के रूप में समझा गया है। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को सामान्य भेदों तथा सीमाओं से परे माना गया है, जबकि व्यक्तिगत आत्मा अर्थात् आत्मन् को परम स्तर पर ब्रह्म से अभिन्न समझा गया है। यह अभिन्नता शंकराचार्य की दार्शनिक प्रणाली के केंद्रीय प्रतिपादनों में से एक है। इसलिए ब्रह्मांड की प्रत्यक्ष विविधता अनेक स्वतंत्र परम वास्तविकताओं के अस्तित्व को स्थापित नहीं करतीय इसके स्थान पर बहुलता को ब्रह्म की अंतर्निहित एकता के संदर्भ में समझा जाता है।

शंकराचार्य ने दृश्य जगत् की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए व्यावहारिक अनुभव और परम वास्तविकता के मध्य भेद स्थापित किया। व्यावहारिक जगत् में व्यावहारिक वैधता विद्यमान रहती है, क्योंकि व्यक्ति उसमें वस्तुओं, संबंधों, कर्मों तथा घटनाओं का अनुभव करता है। किंतु इस व्यावहारिक वैधता का अर्थ यह नहीं है कि जगत् स्वतंत्र एवं निरपेक्ष वास्तविकता से युक्त है। इस भेद के माध्यम से शंकराचार्य एक ओर उस मत से बचते हैं जिसमें जगत् को स्वतंत्र अर्थ में पूर्णतः वास्तविक माना जाता है और दूसरी ओर उस धारणा को भी अस्वीकार करते हैं जिसमें सामान्य अनुभव को पूर्णतः अस्तित्वहीन माना जाता है। माया और अविद्या की अवधारणाएँ यह स्पष्ट करने में सहायता करती हैं कि अद्वैत वास्तविकता चेतना के समक्ष पृथक–पृथक व्यक्तियों और वस्तुओं से युक्त जगत् के रूप में क्यों दिखाई देती है। निम्नलिखित तालिका इस तात्त्विक संरचना से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं का सार प्रस्तुत करती ळें

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

तालिका 1: शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त की प्रमुख तात्त्विक अवधारणाएँ

अवधारणा	**अद्वैत वेदान्त में अर्थ**	**दार्शनिक महत्त्व**
ब्रह्म	परम एवं अद्वैत वास्तविकता	अद्वैत की तत्त्वमीमांसा की आधारभूमि स्थापित करता है
आत्मा	वास्तविक आत्मस्वरूप अथवा शुद्ध चेतना	परम स्तर पर ब्रह्म से अभिन्न माना जाता है
माया	बहुलता के प्रत्यक्ष स्वरूप से संबंधित मूल तत्त्व	विविधता के दृश्य स्वरूप की व्याख्या करता है
अविद्या	वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप के संबंध में अज्ञान	बंधन और मिथ्या आत्मपहचान की व्याख्या करता है
अध्यास	एक वास्तविकता का दूसरी वास्तविकता पर आरोपण	भ्रांत धारणा और मिथ्या आत्मपहचान की व्याख्या करता है
व्यावहारिक वास्तविकता	नाम, रूप और संबंधों से युक्त अनुभूत जगत	परम स्वतंत्रता के बिना भी व्यावहारिक वैधता रखती है

शंकराचार्य के तात्त्विक विश्लेषण में कारणता की समस्या तथा ब्रह्म और व्यावहारिक जगत् के मध्य संबंध का भी विवेचन किया गया है। यदि ब्रह्म परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है, तो परिवर्तनशील और भिन्नताओं से युक्त जगत् के अस्तित्व की दार्शनिक व्याख्या आवश्यक हो जाती है। शंकराचार्य के अनुसार बहुलता का प्रत्यक्ष स्वरूप ब्रह्म के साथ किसी दूसरी स्वतंत्र परम वास्तविकता की स्थापना नहीं करता। व्यावहारिक जगत् अपने आधारभूत वास्तविक तत्त्व पर आश्रित रहता है और उसे उस मूलभूत वास्तविकता से स्वतंत्र रूप से विद्यमान नहीं माना जा सकता। अतः उनका तात्त्विक विश्लेषण ब्रह्म के अद्वैत स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए परिवर्तन, कारणता तथा बहुलता के सामान्य अनुभव की व्याख्या करने का प्रयास करता है। इस प्रकार उनके दार्शनिक योगदान ने परम एकता और व्यावहारिक विविधता के मध्य संबंध की एक व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत की।

4.2 ज्ञानमीमांसात्मक योगदान

शंकराचार्य की ज्ञानमीमांसा उनकी अज्ञान तथा मोक्ष संबंधी अवधारणाओं से घनिष्ठ रूप से संबद्ध थी। अद्वैत वेदान्त के अनुसार मूलभूत समस्या केवल सूचना अथवा सामान्य ज्ञान का अभाव नहीं थी, बल्कि वास्तविकता के स्वरूप के संबंध में विद्यमान मिथ्या समझ थी। सामान्यतः मनुष्य आत्मा की पहचान शरीर, इंद्रियों, मन,

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

भावनाओं तथा व्यक्तिगत व्यक्तित्व के साथ करता है। इस प्रकार की पहचान व्यक्ति और परम वास्तविकता के मध्य पृथकत्व की अनुभूति उत्पन्न करती है। इसलिए ज्ञान का महत्त्व केवल बौद्धिक जानकारी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसे रूपांतरणकारी स्वरूप प्राप्त हुआ, क्योंकि वास्तविक ज्ञान उस अज्ञान का निवारण करता है जो मिथ्या आत्मपहचान के लिए उत्तरदायी है।

शंकराचार्य की ज्ञानमीमांसात्मक संरचना में शास्त्रीय ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्थान था, विशेषतः इसलिए कि ब्रह्म की स्थापना सामान्य इंद्रियजन्य प्रत्यक्ष ज्ञान के माध्यम से पर्याप्त रूप से नहीं की जा सकती। उपनिषदों की शिक्षाएँ परम वास्तविकता के स्वरूप को समझने के लिए प्रमाणिक साधन प्रदान करती हैं। तथापि, शंकराचार्य की दृष्टि दार्शनिक अन्वेषण को शास्त्रीय वचनों की निष्क्रिय स्वीकृति तक सीमित नहीं करती। उनके अर्थ को समझने तथा दिखाई देने वाले विरोधाभासों का समाधान करने के लिए तर्क, मनन और आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक थे। इस प्रकार शास्त्रीय शिक्षाएँ और तर्कपूर्ण अन्वेषण दार्शनिक ज्ञान की प्राप्ति में परस्पर सहयोगी रूप से कार्य करते हैं।

ज्ञान की प्राप्ति में दार्शनिक शिक्षाओं को ध्यानपूर्वक सुनने, उनके अर्थ पर मनन करने तथा निरंतर चिंतन करने की अनुशासित प्रक्रिया सम्मिलित थी। इस प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति अद्वैत के सिद्धांतों की केवल बौद्धिक जानकारी तक सीमित न रहकर आत्मा और ब्रह्म की एकता के गहन साक्षात्कार की ओर अग्रसर होता है। अतः शंकराचार्य ने दार्शनिक तर्क को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया, किंतु साथ ही यह प्रतिपादित किया कि बौद्धिक ज्ञान का चरम परिणाम वास्तविकता की प्रत्यक्ष पहचान में होना चाहिए। इस प्रकार उनकी ज्ञानमीमांसा प्रमाणिक ज्ञान की खोज को आध्यात्मिक साधना के साथ जोड़ती है और यह स्पष्ट करती है कि दार्शनिक समझ व्यक्ति के आत्मस्वरूप तथा जगत् के साथ उसके संबंध को किस प्रकार रूपांतरित कर सकती है।

4.3 ज्ञान और मोक्ष

शंकराचार्य के दर्शन में मोक्ष को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। उन्होंने मोक्ष को किसी पूर्णतः नवीन बाह्य अवस्था की प्राप्ति के रूप में नहीं, बल्कि आत्मा के संबंध में विद्यमान अज्ञान के निवारण के रूप में समझाया। चूँकि वास्तविक आत्मा पहले से ही ब्रह्म से अभिन्न है, इसलिए मोक्ष के लिए व्यक्ति और परम वास्तविकता के मध्य किसी नए संबंध की स्थापना आवश्यक नहीं है। इसके स्थान पर पृथकत्व की मिथ्या धारणा का निवारण आवश्यक है। अतः ज्ञान वह प्रत्यक्ष साधन बन जाता है जिसके माध्यम से अज्ञान तथा उसके परिणामों का निवारण किया जा सकता है।

मोक्ष की ओर अग्रसर होने के लिए विवेकपूर्ण चिंतन, वैराग्य, मानसिक अनुशासन तथा आत्मस्वरूप की निरंतर जिज्ञासा आवश्यक मानी गई है। शंकराचार्य ने नित्य और अनित्य के मध्य भेद करने तथा क्षणभंगुर वस्तुओं और अनुभवों के प्रति आसक्ति को कम करने के महत्त्व पर बल दिया। नैतिक तैयारी और मन का संयम भी महत्त्वपूर्ण थे, क्योंकि अत्यधिक आसक्ति, इच्छाएँ तथा मानसिक अशांति निरंतर दार्शनिक अन्वेषण में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। ऐसी तैयारी आत्मस्वरूप के गहन अन्वेषण तथा उसके अद्वैत स्वरूप की पहचान के

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करती है।

इस प्रकार शंकराचार्य की मोक्ष संबंधी अवधारणा दार्शनिक होने के साथ–साथ रूपांतरणकारी भी थी। इसमें बाह्य धार्मिक क्रियाओं के मात्र पालन के स्थान पर समझ के स्वरूप में मूलभूत परिवर्तन निहित था। जब व्यक्ति आत्मा के अद्वैत स्वरूप का साक्षात्कार कर लेता है, तब भय, आसक्ति तथा अस्तित्वगत भ्रम के मूलभूत आधार समाप्त हो जाते हैं। अतः मोक्ष तात्त्विक ज्ञान और ज्ञानमीमांसात्मक स्पष्टता की चरम परिणति का प्रतिनिधित्व करता है। ज्ञान और मोक्ष के इस संबंध के माध्यम से शंकराचार्य ने दर्शन को केवल सैद्धांतिक चिंतन के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे मानवीय समझ और अस्तित्व में गहन रूपांतरण प्राप्त करने का साधन माना।

5. भारतीय चिंतन पर शंकराचार्य का स्थायी दार्शनिक प्रभाव

भारतीय दर्शन पर शंकराचार्य का प्रभाव व्यापक और स्थायी रहा है, विशेषतः अद्वैत वेदान्त की उनकी व्यवस्थित व्याख्या के माध्यम से। ब्रह्मसूत्रों, भगवद्गीता तथा प्रमुख उपनिषदों पर उनके भाष्यों ने प्रमुख वेदान्तीय शिक्षाओं की व्याख्या के लिए एक सुव्यवस्थित आधार प्रदान किया। इन ग्रंथों ने दार्शनिक विश्लेषण की एक सुदृढ़ परंपरा स्थापित की तथा भारतीय दर्शन की एक प्रमुख शाखा के रूप में अद्वैत वेदान्त को सुदृढ़ रूप से प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी पद्धति ने तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, ईश्वरमीमांसा, आध्यात्मिकता तथा वास्तविकता के स्वरूप से संबंधित उत्तरवर्ती दार्शनिक चर्चाओं को प्रभावित किया।

शंकराचार्य के दर्शन का महत्त्व उत्तरवर्ती वेदान्तीय दार्शनिक विमर्शों पर उसके प्रभाव के माध्यम से विशेष रूप से स्पष्ट हुआ। रामानुजाचार्य तथा मध्वाचार्य जैसे चिंतकों ने ब्रह्म, व्यक्तिगत आत्मा तथा व्यावहारिक जगत् के मध्य संबंध की वैकल्पिक व्याख्याएँ प्रस्तुत कीं। विशिष्टाद्वैत तथा द्वैत ने अद्वैत की तुलना में अद्वैतता, व्यक्तित्व तथा मोक्ष के स्वरूप को अलग–अलग ढंग से समझाया। तथापि, इन प्रतिस्पर्धी दार्शनिक प्रणालियों ने भी यह प्रदर्शित किया कि वेदान्तीय चिंतन के विकास में शंकराचार्य के तर्कों ने कितना केंद्रीय स्थान प्राप्त कर लिया था। परिणामस्वरूप, उनका दर्शन वास्तविकता, ज्ञान तथा मोक्ष से संबंधित उत्तरवर्ती दार्शनिक विमर्शों के लिए एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ–बिंदु बन गया।

शंकराचार्य का प्रभाव पारंपरिक वेदान्तीय विमर्शों से आगे बढ़कर चेतना तथा आत्मस्वरूप से संबंधित व्यापक दार्शनिक चर्चाओं तक भी पहुँचा। वास्तविक आत्मा और व्यावहारिक व्यक्तित्व के मध्य उनके द्वारा स्थापित भेद ने पहचान, जागरूकता तथा चेतना और वास्तविकता के मध्य संबंध जैसे प्रश्नों के अध्ययन के लिए एक आधार प्रदान किया। इसके पश्चात् आधुनिक भारतीय दर्शन तथा तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययनों में अद्वैतवादी विचारों के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न हुई, क्योंकि उन्होंने आत्मनिष्ठता, आभास, वास्तविकता तथा अद्वैत से संबंधित समस्याओं के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। इस प्रकार उनका दार्शनिक ढाँचा व्याख्या तथा आलोचनात्मक परीक्षण, दोनों के लिए निरंतर आधार प्रदान करता रहा।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में भारतीय दर्शन के साथ आधुनिक बौद्धिक संपर्क के दौरान शंकराचार्य का

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट हुआ। स्वामी विवेकानंद तथा सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे चिंतकों ने अद्वैत वेदान्त को व्यापक बौद्धिक समुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया और इसके सिद्धांतों की व्याख्या आधुनिक दार्शनिक तथा आध्यात्मिक प्रश्नों के संदर्भ में की। यद्यपि इन आधुनिक व्याख्याओं ने कई बार अद्वैत को नए सामाजिक तथा बौद्धिक संदर्भों में स्थापित किया, फिर भी शंकराचार्य के मूलभूत विचार उनके प्रमुख आधार बने रहे। उनकी संस्थागत तथा बौद्धिक विरासत ने पारंपरिक अध्ययन–केंद्रों और संन्यासी संस्थाओं के माध्यम से वेदान्तीय शिक्षाओं के संरक्षण तथा प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

अंततः शंकराचार्य की स्थायी प्रासंगिकता उन सार्वभौमिक दार्शनिक प्रश्नों में निहित है जिन्हें उनके चिंतन ने संबोधित किया। आभास और वास्तविकता के मध्य संबंध, आत्मा का स्वरूप, अज्ञान की समस्या तथा मोक्ष की संभावना से संबंधित उनका अन्वेषण निरंतर दार्शनिक चिंतन को प्रेरित करता रहा है। अद्वैत वेदान्त केवल भारतीय दर्शन की एक ऐतिहासिक शाखा के रूप में ही महत्त्वपूर्ण नहीं रहा, बल्कि चेतना, आत्मज्ञान तथा अद्वैत के अध्ययन के लिए एक दार्शनिक ढाँचे के रूप में भी प्रासंगिक बना हुआ है। अतः शंकराचार्य की विरासत एक निरंतर प्रभावशाली बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है, जो शास्त्रीय भारतीय दार्शनिक अन्वेषण को वास्तविकता तथा मानवीय अस्तित्व से संबंधित उत्तरवर्ती और समकालीन विमर्शों के साथ जोड़ती है।

तालिका 2: शंकराचार्य के स्थायी दार्शनिक प्रभाव के प्रमुख क्षेत्र

प्रभाव का क्षेत्र	**शंकराचार्य का योगदान**	**स्थायी महत्त्व**
अद्वैत वेदान्त	अद्वैतवादी दर्शन का व्यवस्थित प्रतिपादन	भारतीय दर्शन की एक प्रमुख दार्शनिक शाखा के रूप में अद्वैत को स्थापित किया
वेदान्तीय विमर्श	ब्रह्म, आत्मा, वास्तविकता तथा मोक्ष से संबंधित दार्शनिक तर्क प्रस्तुत किए	उत्तरवर्ती वेदान्तीय चिंतकों के लिए एक प्रमुख संदर्भ–बिंदु बने
तत्त्वमीमांसा	परम वास्तविकता, बहुलता, माया तथा व्यावहारिक जगत् की स्थिति का विश्लेषण किया	वास्तविकता और आभास से संबंधित निरंतर दार्शनिक विमर्शों को प्रभावित किया
ज्ञानमीमांसा	ज्ञान तथा अज्ञान के निवारण को आत्मसाक्षात्कार के साथ संबद्ध किया	दार्शनिक ज्ञान और मोक्ष के मध्य संबंध को सुदृढ़ किया
चेतना और आत्मस्वरूप	वास्तविक आत्मा और व्यावहारिक व्यक्तित्व के मध्य भेद स्थापित किया	चेतना, पहचान और जागरूकता से संबंधित उत्तरवर्ती चर्चाओं में योगदान दिया

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

आधुनिक भारतीय चिंतन	ऐसे दार्शनिक सिद्धांत एवं अवधारणाएँ प्रदान कीं जिनकी आधुनिक भारतीय दार्शनिकों ने पुनर्व्याख्या की	अद्वैतवादी विचारों को आधुनिक दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विमर्श तक विस्तृत किया

6. निष्कर्ष

शंकराचार्य ने वास्तविकता के अद्वैत स्वरूप तथा आत्मा और ब्रह्म की एकता पर आधारित अद्वैत वेदान्त को एक व्यवस्थित दार्शनिक परंपरा के रूप में स्थापित करके भारतीय दर्शन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी माया, अविद्या तथा अध्यास संबंधी अवधारणाओं ने बहुलता के अनुभव और मानवीय अज्ञान की व्याख्या प्रस्तुत की, जबकि ज्ञान पर उनके विशेष बल ने दार्शनिक अन्वेषण को मोक्ष के साथ संबद्ध किया। उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों तथा भगवद्गीता की उनकी व्याख्याओं ने वेदान्तीय चिंतन के लिए एक स्थायी आधार प्रदान किया तथा उत्तरवर्ती दार्शनिक विमर्शों को व्यापक रूप से प्रभावित किया। चेतना, आत्मस्वरूप, वास्तविकता तथा मोक्ष से संबंधित उनके विचारों पर आधुनिक समय में भी निरंतर विद्वतापूर्ण अध्ययन और विमर्श होता रहा है। शंकराचार्य का स्थायी महत्त्व इस बात में निहित है कि उन्होंने तात्त्विक तर्क, आत्मज्ञान तथा आध्यात्मिक अन्वेषण को एक व्यापक एवं समन्वित दार्शनिक दृष्टि में एकीकृत किया। इस प्रकार उनका दर्शन न केवल भारतीय दार्शनिक परंपरा के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, बल्कि वास्तविकता, चेतना, आत्मस्वरूप तथा मानवीय मुक्ति से संबंधित सार्वभौमिक प्रश्नों के अध्ययन के लिए भी एक स्थायी आधार प्रदान करता है।

संदर्भ

1. दासगुप्ता, एस. एन. (2024). अ हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी वॉल्यूम ५ प्रकाश बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.
2. कीर्ति, जी. (2017). द ग्रेट लाइफ हिस्ट्री ऑफ शंकराचार्य. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च एंड एडवांस्ड स्टडीज, 4(1), 408–416.
3. लार्सन, जी. जे., पॉटर, के. एच., और भट्टाचार्य, आर. एस. (2014). द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन फिलॉसफीजः सांख्य, भारतीय दर्शन में एक द्वैतवादी परंपरा।
4. मिश्र, आर. के. (2015). अद्वैत वेदांत तत्व और आदि शंकराचार्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 4(2), 40–44.
5. पाठक, एस. (2016). आदि शंकराचार्यः सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति पर योगदान और प्रभाव। रिसर्च गेट।
6. पेरेट, आर. डब्ल्यू. (संपादक)। (2013). धर्म का दर्शनः भारतीय दर्शन। रूटलेज।
7. राजन. (2025). समकालीन भारतीय दर्शन का निर्माण और अपेक्षित बदलाव की दुविधाएँः नव–वेदांत के आलोक में श्स्वराजश का आलोचनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ ह्यूमन वैल्यूज, 31(2), 150–170.

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

8. सक्सेना, आर., और सक्सेना, आर. (2023). आधुनिक समय में जगद्गुरु आदि शंकराचार्य की शिक्षाओं के समकालीन महत्व पर एक अध्ययन। एसएसआरएन 4643261 पर उपलब्ध।
9. शर्मा, पी. (2021). सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति पर आदि शंकराचार्य का योगदान और प्रभाव। एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, 11(11), 314–319.
10. शुनमुगम, एम. वाई. (2022). सामाजिक एकजुटता पर शंकर, रामानुज और मध्व के दर्शन में निष्काम कर्म का योगदान। यूनिवर्सिटी ऑफ प्रिटोरिया (दक्षिण अफ्रीका)। श्रीवास्तव, पी. एस. (2016).
11. श्री शंकराचार्य के दर्शन में आध्यात्मिक शिक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज, 6(1), 1–10.
12. सुब्रमण्यन, एस. जी., और घोजोग, बी. (2020). हिंदू धर्म में अद्वैतवाद (गैर द्वैतवाद) के दृष्टिकोण का परिचय और अन्य धर्मों व दर्शनों से इसका संबंध।
13. सुल्ताना, आर. (2023). माया के बारे में शंकर और रामानुज की समझ का दार्शनिक विश्लेषण। इंस्टीट्यूट फॉर साइंस एंड स्पिरिचुअलिटी (प्ज्ञै रिसर्च सेंटर, इस्कॉन दिल्ली)।
14. वैष्णव, पी. (2025). द्वैत से परेः अद्वैत वेदांत और भारतीय बौद्ध धर्म की माध्यमिक परंपराओं में ष्शून्यताष की खोज। एशियन स्टडीज, 13(3), 213–243.
15. वर्मा, पी. के. (2024). आदि शंकराचार्यः हिंदू धर्म के महानतम विचारक। वेस्टलैंड।

AUTHOR'S DECLARATION

I/We, as an author/authors of the above paper/article, hereby declare that the content of this paper is prepared by me/us for publication in this journal is completely my/our own genuine paper and if any person having copyright issue or patent or anything related to the content, I/we shall always be legally responsible for any issue. If any data or information given by me/us is not correct, I/we shall always be legally responsible. With my/our whole responsibility legally and formally have intimated the publisher that the paper has been checked by guide or expert or supervisor to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism. If any issue arises related to plagiarism or any issues, I/we will be solely/entirely responsible for any legal disputes or legal issues. I/we declared that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my/our paper may be removed from the website. I/we also aware that the publication fees is not refunded further in any circumstances. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me/us. I/we also declared that this journal/publisher will not be held responsible any legal issues in future regarding this paper publication in this journal.

Chumki Pal

Dr. Sapna Narayan

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com